ISSN : 2583-2948

आज का समय

Dr. Nitin Upadhye
Adjc. Professor – Mechanical Engineering,
Manipal Academy of Higher Education, Dubai
Flat No. 1104, Grid Tower, Al Barsha 1, Dubai (UAE)
Email: nupadhye@gmail.com , n_upadhye@yahoo.com
Mobile No: +971 56 360 8330

यह समय कितना कड़ा है

सामना जिससे पड़ा है !

ढ़ेर लाशों के लगे हैं, किसके सर ये पाप होगा

कृष्ण दोषी ना हो फिर भी, अंधी माँ का श्राप होगा

व्याध की दृष्टी है मारक, तीर तलुवें में गड़ा है !

रातरानी जल रही है, आज शीतल चांदनी में

लूट रहा है कारवां ही, रहबरों की रहजनी में

खोखले होते समाज में, हर कोई चिकना घड़ा है !

झूठ और सच के निवालों, की हो रही है जुगाली

खेल चौसर का बिछा है, चालें हैं सब देखी भाली

हारा हारा सा मगर क्यों, जीतने वाला धड़ा है !

तेज़ाबी अश्रु हैं फिर भी, नेताओं की खाल मोटी

देश की जलती चिता पर, सेंकते सब अपनी रोटी

भूखी जनता को तो पिज्जा, या जलेबी-फाफड़ा है

ISSN : 2583-2948

आगे निकल जाना तुझे है

मौन का हुंकार भर के, अश्रुओं की कंदरा से
संग में कोई न हो फिर भी निकल जाना तुझे है
होना है आगे समय से, धडकनो की तीव्र लय से
एक शिला से ही नारी में बदल जाना तुझे है

पितृगृह की लांछनाएँ यज्ञ वेदी में हवन कर
भातृ-मृत्यु के भी भय को कैद में न तू सहन कर
कोई रेखाएं क्यूँ खींचे, तेज़ अपना जान ले तू
हरण करने जो भी आये तू वही उसका दहन कर

ऊर्जा का इक स्त्रोत है तू, क्षमता से ओतप्रोत है तू
तम मिटाने ज्योति पुंजों सा ही जल जाना तुझे है
संग में कोई न हो फिर भी निकल जाना तुझे है 1
इक क्षण के मोह का दंड, हो न वध पुत्रों के द्वारा
क्यूँ सगर के पुत्र पापी ढूंढते गंगा की धारा
एक महिषासुर के आगे देव सारे नत खड़े हैं
रक्तबीजों को मिटाने माँ ने काली रूप धारा
तू ही शक्ति, तू ही भक्ति, तू आसक्ति, तू विरक्ति
तू सरल है तू तरल, हर रूप ढल जाना तुझे है
संग में कोई न हो फिर भी निकल जाना तुझे है 2

ISSN : 2583-2948

भूलने का श्राप लेकर नर सभी दुष्यंत होंगे

मत्स्यगंधा से मिलन को पाराशर सयंत होंगे

सूर्य हो या इंद्र हो या धर्म हो या हो पवन

मंत्र से बंधे हुए सारे यहाँ पर संत होंगे

कर्ण का न त्याग करना, तू भरत को ले विचरना

जाबाला बन सत्यकाम को ले महल जाना तुझे है

संग में कोई न हो फिर भी निकल जाना तुझे है 3

चूड़ियों के साथ चूल्हा, चूड़ियां टूटे, चिता

स्वामी सा अधिकार लेते भाई, बेटा या पिता

जननी, जीवन-संगनी, अनुजा या तनया के लिए

है अघोषित इस जगत में इक अलग ही संहिता

पथ हो आलोकित स्वयं से, मुक्त होकर हर वहम से

गिर के उठना, आगे बढ़ना और संभल जाना तुझे है

संग में कोई न हो फिर भी निकल जाना तुझे है 4